Teachingninja.in

Latest Govt Job updates

Private Job updates

Free Mock tests available

Visit - teachingninja.in

HPJS
(Mains)

Previous Year Paper
(English) Paper-IV
2018

Teachingninja.in

Teachingninja.in

000085

[This question paper contains 3 printed pages]

Roll Number: ____________

HPJS (Main) Examination, 2018

PAPER–IV: ENGLISH COMPOSITION

Time: 3 Hours | Maximum Marks: 150

Note:

1. Both questions are compulsory.
2. Marks are divided and indicated against each question.
3. Write legibly.

Teachingninja.in

1. Write an essay of <u>1100-1200 words</u> on any <u>one</u> topic out of the following three topics : 100 Marks

(a) Social Media: Its Charms and Hazards.

(b) Economic Prosperity vis-a-vis Environmental Conservation.

(c) Education sans Ethics: Virtually Implausible.

2. Translate the following Hindi passage into English: 50 Marks

किसी भी संस्कृति के उदगम के विषय में जानने और समझने में लोककथा का बहुत महत्त्व है। लोककथाएं वे कथाएं हैं जो सदियों से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी से तीसरी पीढ़ी के सतत कर्म में प्रवाहित होती चली आ रही हैं। ये प्रवाह उस समय से आरम्भ होता है जिस समय से मनुष्य ने अपने अनुभवों, कल्पनाओं एवं विचारों का परस्पर आदान–प्रदान प्रारंभ किया।

आदिवासी समुदायों में लोककथाओं का जो रूप आज भी विद्‌यमान है वह लोककथाओं के उस रूप के सर्वाधिक निकट है जो विचारों के संप्रेषण और ग्रहण की प्रक्रिया आरंभ होने के समय रहा होगा। लोककथाओं में मनुष्य के जन्म, पृथ्वी के निर्माण, देवता के व्यवहार, भूत–प्रेत, राक्षस आदि से लेकर लोकव्यवहार से जुड़ी कथाएं निहित हैं।

Teachingninja.in

लोककथाओं का मूल उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहीं रहा, इसके माध्यम से अनुभावों का आदान–प्रदान, मानवता की शिक्षा, सद्कर्म का महत्व तथा अनुचित कर्म से दूर रहने का संदेश दिया जाता रहा है। इसलिए इन कथाओं में भूत–प्रेत के भय की कल्पना और विभिन्न प्रकार के मिथक विद्यमान हैं जिससे मनुष्य ऐसे कार्य न करें जिससे उसे क्षति पहुंचे। इसे मनुष्यता के विरूद्ध कार्य करने वालो के लिए आदिवासी संसार की भोली–भाली चेतवानी कहा जा सकता हैं।

भारत में अनेक आदिवासी जातियां आज भी अपनी मौलिक मान्यताओं, रीति रिवाजों व लोककथाओं के साथ जीवन यापन कर रही हैं। किन्तु समय और समाज में परिवर्तन के क्रम में ये आदिवासी जनजातियां भी धीरे धीरे अपनी वाचिक धरोहरों को खोने लगी हैं। अतः समय रहते आदिवासी लोक कथाओं की इन धरोहरों को सहेज लेना अत्यंत आवश्यक है। ये कथाएं हमारे लिए उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी कि कोई पुरातात्विक धरोहर क्योंकि इनमें जीवन के अनुभवों एवं कल्पनाओं को बिना किसी कृत्रिमता के प्रस्तुत किया जाता है। ये प्रवाह कहीं सरस्वती नदी की भांति लुप्त न हो जाए इसलिए इन्हे सहेज लेना आवश्यक हैं।

*****

Teachingninja.in